MSB
Class X
Hindi
Sample Paper

Time: 3 hrs **Total Marks: 100**

सूचनाएँ:

1) सूचना के अनुसार गद्य, पद्य तथा पूरक पठन की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
2) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें।
3) रचना विभाग तथा व्याकरण विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।
4) शुद्ध, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

विभाग 1 : गद्य [24]

प्रश्न 1.

(क) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए। [8]

1) संजाल पूर्ण कीजिए। [2]

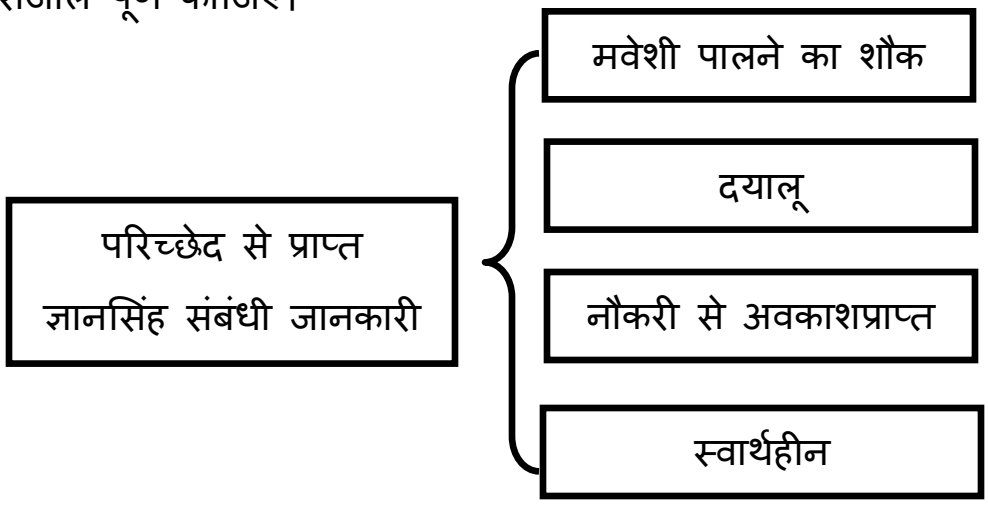

ज्ञान सिंह को मवेशी पालने का बहुत शौक था। प्राय: उसके घर के दरवाजे पर भैंस या गाय बँधी रहती। तीन बरस पहले उसने एक जर्सी गाय खरीदी थी। उसका नाम लक्ष्मी रखा था। अधेड़ उम्र की लक्ष्मी इतना दूध दे देती थी कि उससे घर की जरुरत पूरी हो जाने के बाद भी बाकि दूध गली के कुछ घरों में चला जाता। दूध बेचना ज्ञान सिंह का धंधा नहीं था। केवल गाय को चारा और दर्रा आदि लेने के लिए कुछ पैसे जुटा लेता था। नौकरी से अवकाश के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी का वह मकान खाली करना था। समस्या थी तो लक्ष्मी को किसी हालत में बेच नहीं सकता था। उसे अपने साथ ले जाना भी संभव नहीं था। जब अवकाश में दस-पंद्रह दिन रह गए तो करामात अली से कहा - "मियाँ! अगर लक्ष्मी को तुम्हें सौंप दूँ तो क्या तुम उसे स्वीकार करोगे...?"

1. कारण लिखिए: [2]

i. ज्ञान सिंह के दूध बेचने का कौन-सा उद्देश्य था?

उत्तर : ज्ञान सिंह के दूध बेचने का उद्देश्य पैसे कमाना नहीं था बल्कि केवल गाय को चारा और दर्रा आदि लेने के लिए कुछ पैसे जुटाना था।

ii. ज्ञान सिंह की लक्ष्मी को लेकर क्या समस्याएँ थी?

उत्तर : अवकाश प्राप्त करने के बाद ज्ञान सिंह को कंपनी वाला मकान छोड़ना था। पशु-प्रेमी होने के कारण वह किसी भी कीमत पर लक्ष्मी को बेच नहीं सकता था और उसे साथ ले जाना भी संभव नहीं था।

2. 'सेवक' शब्द का पर्यायवाची और विलोम शब्द लिखें। [2]

उत्तर : पर्यायवाची - सेवक - नौकर, अनुचर, दास, चाकर

विलोम - सेवक - स्वामी

3. पालतू जानवरों के साथ किये जाने वाले सौहार्दपूर्ण व्यवहार के बारे में अपने विचार लिखें। [2]

उत्तर : जानवरों में भी जान होती है। उन्हें भी मनुष्य की तरह ही शारीरिक जरूरतें जैसे भूख-प्यास आदि लगती है। पालतू जानवर तो अपने मालिक से केवल उचित देखभाल और प्यार की अपेक्षा करते हैं। यदि घर में कोई भी पालतू जानवर है तो उसे घर के सदस्य की तरह ही देखभाल करनी चाहिए। उसके खाने-पीने से लेकर उसकी औषधियों तक सभी बातों का ध्यान रखना चाहिए। जैसे हम घर के छोटे सदस्यों के साथ खेलते हैं, समय व्यतीत करते हैं ठीक उसी प्रकार से हमें अपने घर के पालतू जानवर के साथ भी करना चाहिए।

ख) परिच्छेद को पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए। [8]

1. संजाल पूर्ण कीजिए। [2]

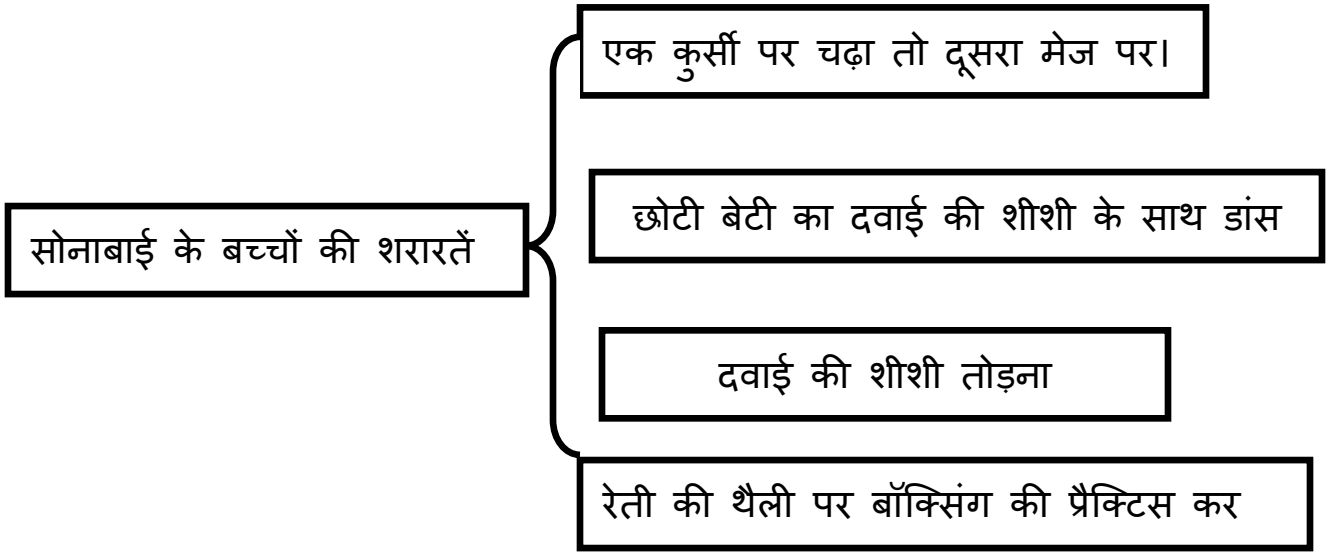

बच्चे खेलने लगे। एक कुर्सी पर चढ़ा तो दूसरा मेज पर। सोनाबाई की छोटी लड़की दवा की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी। रप-रप की आवाज ने मेरा ध्यान बँटाया। क्या देखता हूँ कि सोनाबाई का एक लड़का मेरी टाँग के साथ लटक रही रेती की थैली पर बॉक्सिंग की प्रैक्टिस कर रहा है। मैं इसके पहले उसे मना करता, सोनाबाई की लड़की ने दवा की शीशी पटक दी। सोनाबाई ने एक पल लड़की को घूरा, फिर हँसते हुए बोली - "भैया, पेड़े खिलाओ, दवा का गिरना शुभ होता है। दवा गई समझो बीमारी गई।" इसके दो घंटों बाद सोनाबाई गई, यह कहकर कि फिर आऊँगी। मैं भीतर तक काँप गया।

2. उत्तर दें: [2]

(1) सोनाबाई की छोटी लड़की क्या करने लगी?

उत्तर : सोनाबाई की छोटी लड़की लेखक की दवाई की शीशी लेकर कथकली डांस करने लगी।

(2) सोनाबाई लेखक से पेड़े की माँग क्यों करने लगी?

उत्तर : सोनाबाई के अनुसार दवाई की शीशी का टूटना बीमारी ठीक होने का शुभ-संकेत है इसलिए उसकी छोटी बेटी के हाथ से दवा की शीशी टूटने के कारण वह लेखक से पेड़े की माँग करने लगी।

(3) (i) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए। [1]

भूलना, पीसना

उत्तर :

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप

भूलना	भुलाना	भुलवाना
पीसना	पिसाना	पिसवाना

(ii) 'भतीजा' शब्द का स्त्रीलिंग शब्द लिखें। [1]

उत्तर : भतीजा - भतीजी

(4) मरीज से मिलने जाते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए? [2]

उत्तर : मरीज से मिलने जाते समय सर्वप्रथम हमें उसके आराम में खलल न पड़े इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए इसलिए अस्पताल के नियत किये गए समय पर ही हमें उससे मिलने जाना चाहिए। मरीज को उसकी बीमारी से संबंधित अनावश्यक सुझावों से परेशान नहीं करना चाहिए। मरीज से संक्षिप्त बातचीत करना चाहिए और जल्द-से जल्द अस्पताल से निकल जाना चाहिए। जहाँ तक हो सके छोटे बच्चों को अस्पताल में नहीं ले जाना चाहिए। मरीज के सामने नकारात्मक बातों की अपेक्षा उसका उत्साह बढ़ाने वाली बातों को करना चाहिए।

ग) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर सूचनानुसार के अनुसार कृतियाँ कीजिए:

परिश्रम व सफलता का आपस में बड़ा गहरा संबंध है। हमें तभी सफलता मिलती है जब हम परिश्रम करते हैं। परिश्रम से मनुष्य सदैव मेहनती बना रहता है, परिश्रम जीवन को गति प्रदान करता है। यह मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्त्व रखता है। परिश्रम की उपेक्षा मनुष्य को निकम्मा व असफल बना देती है। परिश्रम समस्त कठिनाइयों से निकालने में समर्थ होता है।

परिश्रमी मनुष्य भाग्य के भरोसे नहीं बैठे रहते हैं। परिश्रम के दम पर कई महान विभूतियों ने अंसभव कार्यों को संभव कर दिखाया है। जिस देश में लोग परिश्रम करते हैं, वह देश उन्नति, विकास, समृद्धि और सफलता के शिखर पर खड़ा रहता है।

1. संजाल पूर्ण कीजिए। [4]

i)

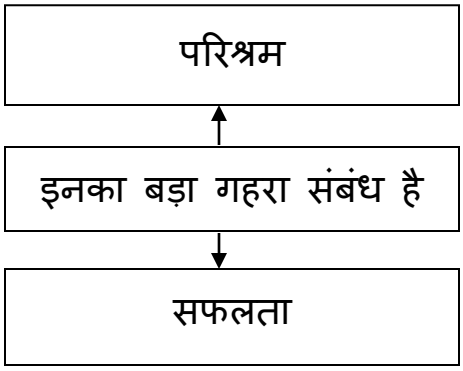

ii)

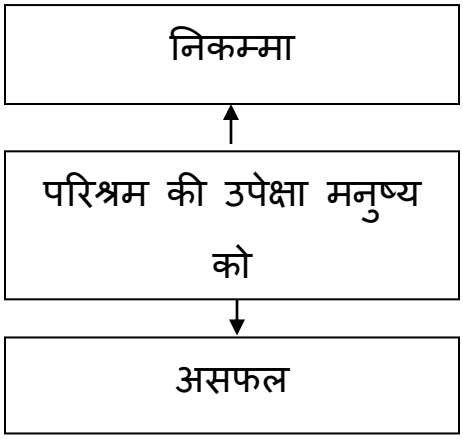

2. उत्तर लिखिए: [2]

i) परिश्रम जीवन को क्या प्रदान करता है?

उत्तर : परिश्रम जीवन को गति प्रदान करता है।

ii) परिश्रमी मनुष्य किसके भरोसे नहीं बैठ रहते हैं?

उत्तर : परिश्रमी मनुष्य भाग्य के भरोसे नहीं बैठे रहते हैं।

3. परिश्रम इस विषय पर 8-10 पंक्तियों में लिखिए: [2]

उत्तर : परिश्रम का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। मनुष्य परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध कर सकता है। परिश्रम अर्थात् मेहनत के ही द्वारा मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। हर मानव की कुछ इच्छाएँ व आवश्यकताएँ होती हैं। वह सुख शान्ति की कामना करता है, दुनिया में नाम की इच्छा रखता है। किन्तु कल्पना से ही सब कार्य सिद्ध नहीं हो जाते, उसके लिये हमें कठिन परिश्रम का सहारा लेना पड़ता है।

विभाग 2 : पद्य [18]

प्रश्न 2.

च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [12]

1. संजाल पूर्ण कीजिए: [2]

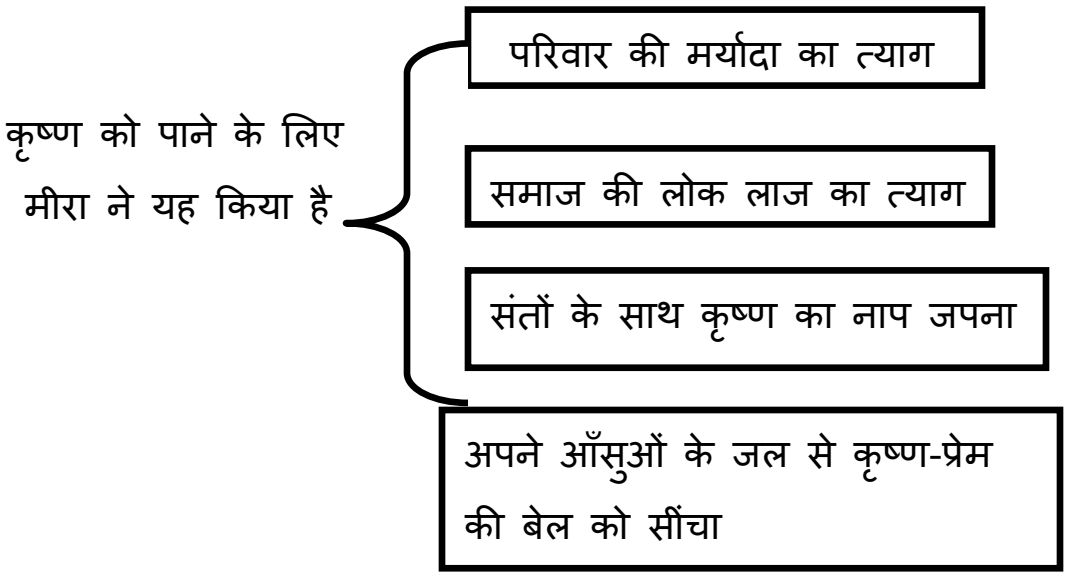

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।
छाँड़ि दी कुल की कानि कहा करिहै कोई।

संतन ढिंग बैठि-बैठि लोक लाज खोई॥
अँसुवन जल सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई॥
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई॥
भगत देख राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी "मीरा" लाल गिरिधर तारो अब मोही॥

2. उत्तर दें: [2]

1. मीरा किसे अपना सर्वस्व मानती है और क्यों?

   उत्तर : मीरा कृष्ण को अपना सर्वस्व मानती है क्योंकि उन्होंने कृष्ण को बड़े प्रयत्नों से पाया है।

2. मीरा ने किस प्रकार से प्रेम की बेल को सींचा है?

   उत्तर : मीरा में अपने आँसुओं के जल से कृष्ण रूपी प्रेम की बेल को सींचा है।

3. प्रस्तुत पद्यांश की अंतिम चार पंक्तियों का भावार्थ सरल हिंदी में लिखिए। [2]

उत्तर : प्रस्तुत कविता में मीरा ने श्रीकृष्ण को अपना पति मानते हुए कहती है कि उन्होंने कृष्ण के प्रेम रूपी दूध को अपनी भक्ति की मथानी से बिलोकर दही से सार तत्व अर्थात् घी को निकाल लिया है और छाछ रूपी सारहीन तत्व को छोड़ दिया है। वे कहती है कि प्रभु के भक्त को देखकर वह खुश होती है और संसार को मोह

माया में लिप्त देखकर रोती है। वे स्वयं को कृष्ण की दासी बताते हुए कृष्ण को अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती है।

4. निम्न आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए।

1. रचनाकार का नाम [1]
2. रचना की विधा [1]
3. पसंद की पंक्तियाँ [1]
4. पंक्तियाँ पसंद होने का कारण [1]
5. रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा। [2]

1. रचनाकार का नाम - गिरिधर नागर, संत मीराबाई द्वारा
2. रचना का प्रकार - गान
3. पसंदीदा पंक्ति - दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई।
   माखन जब काढ़ि लियो छाछा पिये कोई॥
4. पसंदीदा होने का कारण - उन्होंने कृष्ण के प्रेम रूपी दूध को अपनी भक्ति की मथानी से बिलोकर दही से सार तत्व अर्थात् घी को निकाल लिया है और छाछ रूपी सारहीन तत्व को छोड़ दिया है।
5. रचना से प्राप्त संदेश - यह संसार अनेक प्रकार के विकारों से भरा है और मानव जीवन बड़ा अल्प है अत: हमें प्रभु के प्रेम में स्वयं को डूबा देना चाहिए, क्योंकि संसार में केवल ईश्वर ही स्थायी है।

छ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए। [6]

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो

आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

1) [2]

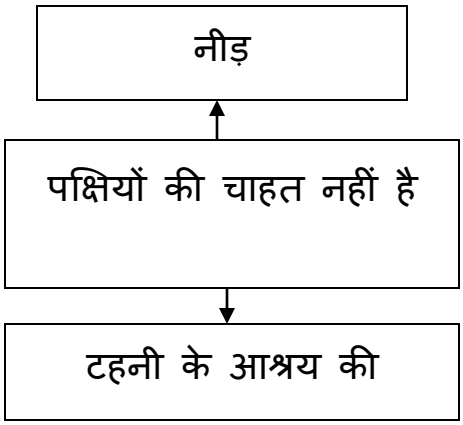

2) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों। [2]

विघ्न, पंख

उत्तर : विघ्न - पक्षियों की क्या चाहत है?

पंख - पक्षियों को क्या मिले हुए है?

3) अंतिम दो पंक्तियों का भावार्थ लिखें। [2]

उत्तर : भावार्थ : पक्षी मानवों से अनुनय करते हैं कि यदि उन्हें उड़ने के लिए पंख दिए गए हैं तो, उनकी इस आकुल उड़ान में मानव विघ्न और बाधा न डाले। मानव उन्हें स्वतंत्र रूप से उड़ने दे।

विभाग 3 : पूरक पठन [8]

प्रश्न 3.

अ) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [4]

1. संजाल पूर्ण कीजिए। [2]

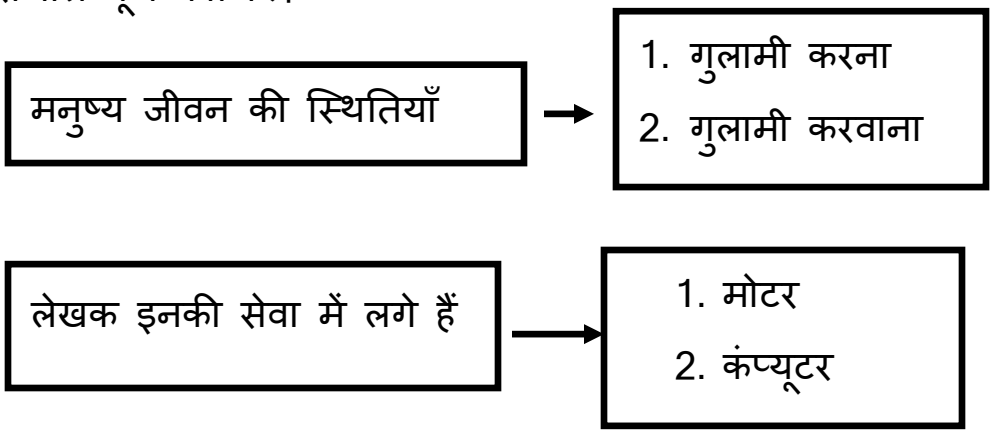

कुछ दिनों पहले एक कंप्यूटर ने मुझे चालीस हजार रुपयों में ख़रीदा है! आज-कल उसकी गुलामी में हूँ। उसके नखरों को सिर झुकाकर झेलने में ही अपना कल्याण देख रहा हूँ। उसका वादा है कि एक दिन वह मुझे लिखने-पढ़ने की पूरी आज़ादी देगा। फिलहाल उसकी एकनिष्ठ सेवा में ही मेरा उज्ज्वल भविष्य है।

इसके पहले एक मोटर मुझे भारी दामों में खरीद चुकी है। उसकी सेवा में भी हूँ। दरअसल, चीजों का एक पूरा परिवार है जिसकी सेवा में हूँ। आदमी का स्वभाव नहीं बदलता या बहुत कम बदलता है। गुलामी करना-करवाना उसके स्वभाव में है। सिर्फ तरीके बदले हैं, गुलामी की प्रवृत्ति नहीं। हजारों साल पहले एक आदमी मालिक होता था और उसके दरजनों गुलाम होते थे। अब हर चीज के दरजनों गुलाम होते हैं।

2. 'जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं,' विचार व्यक्त करें। [2]

उत्तर : जिन कामों को करने का हमें शौक होता है उस कार्य करने में हमारी रूचि भी बढ़ती जाती है। अपनी पसंदीदा पुस्तक पढ़ने के लिए न केवल हम समय निकाल लेते बल्कि अपनी प्रिय नींद का त्याग भी कर देते हैं परंतु वही कोर्स की किताबें खोलते ही आँखें नींद से बोझिल होने लगती है। शौक से उत्पन्न रूचि सफलता की सीढ़ी है।

आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश को पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए। [4]

मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसीं आँखें
चलती साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन
सितारे छिपे
बादलों की ओट में
सुना आकाश
तुमने दिए
जिन गीतों को स्वर
हुए अमर
सागर में भी रहकर मछली
प्यासी ही रही

1. तालिका पूर्ण कीजिए: [2]

	स्थिति	निवास स्थान
मछली	प्यासी	सागर

सितारे	बादलों की ओट में छिपे हुए	आकाश

2. परिणाम लिखिए: [2]

1. सितारों का छिपना

उत्तर : सूना आकाश

2. तुम्हारा गीतों को स्वर देना

उत्तर : गीतों का अमर होना

विभाग 4 : व्याकरण **[18]**

प्रश्न 4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

(1) i) अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानकर लिखिए। [1]

- रायपुर छोटा-सा <u>शहर</u> है।

उत्तर : शहर - जातिवाचक संज्ञा

ii) निम्नलिखित शब्द का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए [1]

- आधुनिक - आजकल सारी मशीनें आधुनिक है।

(2) (i) निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए। [1]

- या - आप ठंडा लेगें या गरम।

(ii) अधोरेखांकित शब्द का शब्द भेद लिखिए: [1]

1. धन <u>के बिना</u> सुख नहीं मिलता।

उत्तर : संबंधबोधक अव्यय

(3) निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए। [2]

- मैंने भारत को प्रेम किया है।

  उत्तर : मैंने भारत <u>से</u> प्रेम किया है।

- मेरा गली में एक भी पेड़ नहीं है।

  उत्तर : <u>मेरी</u> गली में एक भी पेड़ नहीं है।

(4) सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए। [2]

लगना - रमा चुपचाप घर जाने लगी।

पहुँचना - आज सुबह-सुबह मामाजी आ पहुँचे।

(5) 'सुनना' मूल क्रिया के प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए। [1]

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
सुनना	सुनाना	सुनवाना

(6)(i) अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए। [1]

की।

उत्तर : देश की खातिर शहीदों ने अपनी जान <u>की</u> बाजी लगा दी।

(ii) अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए। [1]

वाह! कितना सुंदर बगीचा है।

उत्तर : वाह! - विस्मयादिबोधक अव्यय

(7) काल परिवर्तन कीजिए। [2]

बढ़ई कुर्सियाँ बनाता था। (अपूर्ण वर्तमानकाल और भविष्यकाल)

उत्तर : बढ़ई कुर्सियाँ बना रहा है।

बढ़ई कुर्सियाँ बनाएगा।

(8) वाक्य में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए [1]

मैंने तय किया कि आज किसी से नहीं मिलूँगा।

से - करण कारक

(9) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और भेद भी लिखिए: [1]

दुर्लभ - दु: + लभ - विसर्ग संधि

(10) निम्न वाक्य में उचित विरामचिह्न का प्रयोग करें: [1]

भूकंप के कारण पुराने कार्यालय का नामनिशान नहीं रहा

उत्तर : भूकंप के कारण पुराने कार्यालय का नाम-निशान नहीं रहा।

(11) i) निम्न वाक्य का रचना के आधार पर भेद लिखिए: [1]

उत्तर : राकेश गाँव जाने की बात रटता जा रहा था। - सरल वाक्य

ii) सूचना के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए। [1]

गाय ने दूध देना बंद कर दिया। (विस्मयार्थक वाक्य)

उत्तर : अरे! गाय ने दूध देना बंद कर दिया।

(12) (i) मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए। [1]

जी ऊबना

उत्तर : जी ऊबना - नीरस हो जाना।

वाक्य : कई वर्षों से लगातार एक ही काम करते-करते किसी का भी जी ऊब सकता है।

(ii) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए। [1]

मौका मिलते ही जेबकतरे ने यात्री के पर्स को गायब कर दिया।

(हाथ साफ़ कर दिया, चोरी कर दिया)

उत्तर : मौका मिलते ही जेबकतरे ने यात्री के पर्स पर हाथ साफ़ कर दिया।

विभाग 5 : रचना विभाग [32]

सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेदों में लेखन अपेक्षित है।

प्रश्न 5. पत्रलेखन

(1) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए: [5]

रामदेवी छात्रावास, सुभाष मार्ग, नागपुर से मितेश/मीना कामत अपनी छात्रावास के आपके अनुभव के बारे में अपनी माताजी को पत्र लिखता/लिखती है।

22 फरवरी 20 ..

आदरणीय माताजी,

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ ठीक हूँ। आशा करती हूँ, आप सब वहाँ सकुशल होगे।

आप सबको छोड़कर पहली बार अकेली रह रही हूँ। मुझे आप सभी की बहुत याद आती है। पहले दो-तीन दिन जरा भी मन नहीं लगा परंतु अब बहुत-सी लड़कियाँ मेरी सहेलियाँ बन गई है। यहाँ के शिक्षक भी बहुत अच्छे है। कपड़े धोना, बिस्तर लगाना, सभी वस्तुएँ ठीक जगह पर रखना मैं सीख रही हूँ। मैं यहाँ मन लगाकर पढ़ रही हूँ।

पिताजी को मेरा प्रणाम और छोटी को प्यार देना।

तुम्हारी लाड़ली

मीना कामत

रामदेवी छात्रालय

सुभाष मार्ग

नागपुर।

ई-मेल आईडी: pqr@abc.com

प्रति,
रोहिणी कामत
रुद्रपुर
रुद्रप्रयाग

प्रेषक,
मीना कामत
रामदेवी छात्रालय
सुभाष मार्ग
नागपुर।
ई-मेल आईडी: pqr@abc.com
22 फरवरी 20 ..

अथवा

रमेश/रमा पवार, 74 विदयाप्रसाद, प्रतापसिंह नगर, कोल्हापुर 415004 से थानाध्यक्ष, भवानी मंडप, कोल्हापुर को पत्र लिखकर अपनी साइकिल चोरी हो जाने के संबंध पत्र लिखता/लिखती है।

दिनाँक : 28 मार्च 2013

सेवा में,

थानाध्यक्ष,

भवानी मंडप,

कोल्हापुर।

विषय - साइकिल चोरी संबंधी पत्र।

महोदय,

मैं प्रतापसिंह नगर रहिवासी कक्षा नौवीं का छात्र हूँ। कल मैं कुछ घरेलू सामान खरीदने हेतु स्थानीय बाजार गया था। मैंने अपनी साइकिल जनता किराना भंडार के आगे खड़ी की थी। सामान लेकर जब मैं वापस लौटा तो मेरी साइकिल का कहीं कोई पता नहीं था। मैंने आस-पास के दुकानदारों तथा लोगों से भी पूछताछ की पर कोई लाभ न हुआ।

अत: आपसे निवेदन है कि आप इस चोरी की घटना को दर्ज करें और जल्द-से-जल्द मेरी साइकिल ढूँढने का प्रयास करें।

भवदीय

रमेश पवार,

74 विदयाप्रसाद,

प्रतापसिंह नगर,

कोल्हापुर।

415004।

इ-मेल आ

ईडी: pqr@abc.com

टिकट

प्रति,
थानाध्यक्ष,
भवानी मंडप,
कोल्हापुर।

प्रेषक,
रमेश पवार,
74 विदयाप्रसाद,
प्रतापसिंह नगर,
कोल्हापुर।
415004।
इ-मेल आईडी: pqr@abc.com
दिनाँक : 28 मार्च 2013

(2) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पाँच ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों: [5]

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के कारण वह अच्छे-बुरे सभी प्रकार के लोगों के संपर्क में आता है। अच्छे लोगों के साथ उठने-बैठने से मनुष्य में अच्छे गुण तथा बुरे लोगों के साथ रहने से बुरे गुण आते हैं। इस प्रकार मनुष्य पर संगति का प्रभाव पड़ता है। शराब बेचने वाले के कलश में यदि दूध भी हो तो लोग उसे शराब ही समझते हैं। मनुष्य जैसे लोगों के साथ बैठता है, वैसा ही प्रभाव ग्रहण करता है। दुर्जन और साधु के घर पले तोते

संगति के महत्त्व को स्पष्ट कर देते हैं। साधु के घर पला तोता राम-राम तथा भजन बोलता है, जबकि दुर्जन के घर पला तोता सदा गालियाँ ही देता रहता था। सत्संग के सागर में वचनों के मोती हैं। सत्संग के बिना मनुष्य को विवेक प्राप्त नहीं होता। जिस मनुष्य में विवेक नहीं, उसमें और पशु में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। अत: मनुष्य को कुसंगति से दूर रहने तथा सत्संगति प्राप्त करते रहना चाहिए।

1. मनुष्य को किस प्रकार का प्राणी कहा गया है?
2. मनुष्य पर किसका प्रभाव पड़ता है?
3. सत्संग के बिना मनुष्य क्या नहीं प्राप्त कर सकता?
4. मनुष्य को क्या करते रहना चाहिए?
5. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

(3) वृत्तांत लेखन

रोहतक विद्यालय में अंध छात्रों द्वारा बनाई गई राखी प्रदर्शनी का लगभग 60-80 शब्दों में वृत्तांत लेखन कीजिए। [वृत्तांत लेखन में स्थान,समय घटना का उल्लेख आवश्यक है।] [5]

रोहतक विद्यालय में राखी प्रदर्शनी

30 जुलाई 2016 को रोहतक विद्यालय में राखी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन शहर कल्याण मंत्री रामाराव ने किया। प्रदर्शनी में विभिन्न आकार-प्रकार,रंग और डिजाईन की राखियाँ प्रदर्शित की गई थी। सभी राखियाँ इतनी सुंदर थी कि कहीं से भी ऐसा नहीं लग रहा था कि वे अंधें बच्चों द्वारा बनाई गई थी। सुंदर राखियों को देखकर सभी उन बच्चों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। शहर कल्याण मंत्री रामाराव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उन बच्चों की दिल खोलकर तारीफ़ की और अपने विभाग की ओर से ऐसे बच्चों को मुख्यधारा में लाने के लिए अपनी ओर से निधि और

हरसंभव सहायता की भी घोषणा की। इस प्रकार इस प्रदर्शनी को आम नागरिकों का अच्छा प्रतिसाद मिला।

(4) निम्नलिखित जानकारियों के आधार पर विज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए। [5]

- चमक केश तेल
- विशेषता
- संपर्क

जानदार बाल

क्या आप अपने बेजान बालों से शर्मिंदा हैं...???

तो आजमाइए...

चमक केश तेल

सभी प्रमुख मेडिकल दुकानों में उपलब्ध

(5) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक और सीख भी दीजिए: [5]

किसी गाँव में अकाल-------दयालु जमींदार द्वारा लोगों को रोटियाँ बाँटना------ रोटियों में एक छोटी रोटी-------किसी का छोटी रोटी न लेना------एक बालिका का छोटी रोटी लेना-----घर जाकर रोटी तोड़ना-----रोटी में से सोने का सिक्का निकलना-----लड़की का जमींदार के पास जाकर सिक्का लौटाना--------इनाम पाना------सीख।

ईमानदार रमा

एक बार महाराष्ट्र के खेड़ गाँव में भीषण अकाल पड़ा। गाँव में चारों और खाने के लाले पड़ गए। वहाँ के जमींदार ठाकुर बलभद्र बड़े ही दयालु जमींदार थे। उनसे लोगों का कष्ट देखा न गया वे रोज सुबह गाँव के लोगों में रोटियाँ

बँटवाते थे। एक दिन बँटनेवाली रोटी में एक छोटी रोटी थी। उस छोटी रोटी को कोई नहीं उठा रहा था। एक छोटी बालिका रमा वहाँ आई और उसने वह छोटी रोटी को उठा ली और अपने घर चली गई। घर में जब उस बालिका ने उस रोटी को तोड़ा तो उसमें से सोने का एक सिक्का निकला। रमा तुरंत भागते हुए जमींदार ठाकुर बलभद्र के पास पहुँचती है और उन्हें वह सिक्का लौटा देती है। यह देखकर जमींदार ठाकुर बलभद्र बड़े प्रसन्न होते हैं और रमा को उसकी ईमानदारी के लिए वह सिक्का इनाम में देते हैं।

सीख : ईमानदारी का फल हमेशा ही सुखद होता है।

(6) किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में निबंध लिखिए। [7]

मनोरंजन के आधुनिक साधन।

जिस प्रकार मनुष्य को शरीर के लिए हवा, पानी भोजन जैसी मूलभूत वस्तुओं की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य को अपने मन को स्वस्थ रखने के लिए मनोरंजन की आवश्यकता होती है। आदिकाल से ही मनुष्य अपने मनोरंजन के भिन्न-भिन्न साधन खोजता रहा है। पहले मनुष्य मनोरंजन के लिए गीत-संगीत, नौटंकी, खेल, सर्कस, यात्रा आदि का सहारा लिया करता था। समय के परिवर्तन से भी मनोरंजन के साधनों में बदलाव आया है। आज वैज्ञानिक युग में मनुष्य के लिए मनोरंजन के साधनों की कोई कमी नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की रूचि भिन्न प्रकार की होती है। अंत: वह अपनी रूचि के अनुसार ही मनोरंजन के साधनों की खोज करता रहता है आज मनुष्य के लिए घर और बाहर दोनों ही जगह मनोरंजन के अत्याधुनिक साधन उपलब्ध है। आज क्रिकेट, फुटबॉल, टेनिस, बॉलीबाल, बैटमिंटन, तैराकी, घुड़सवारी आदि न जाने कितने ही खेलों से न केवल अपना मनोरंजन कर सकते और साथ ही अपने सेहत को भी अच्छा रख सकते हैं।

घर बैठकर भी वो शतरंज, कैरम अदि खेलकर अपना मनोरंजन कर सकता है और आज जैसे इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध होने से तो घर बैठकर ही अनेक मनोरंजक खेल खेल सकते हैं और कुछ खेल तो ऐसे है जहाँ आप अपने घरों में ही बैठे रहते हैं परन्तु आप ऑनलाइन ग्रुप सदस्य बनाकर एक साथ मिलकर भी कई खेल खेल सकते हैं। इस प्रकार से यदि देखा जाए तो सूचना क्रान्ति के आने से आज मनोरंजन के अनेक साधन सहज और सरल रूप से हमारे लिए उपलब्ध हैं।

'एक अंधे की आत्मकथा'

उस दिन अंधें भिखारी को मंदिर की सीढ़ियों पर न पाकर न जाने क्यों मन विचलित हो गया। पूछने पर पता चला कि वह आज नहीं आया। दिनभर न चाहते हुए भी मैं उसके ही बारे में सोचती रही। और क्यों न हो वह इतना सुरीला गाता था कि कोई भी उसके मोहपाश में बंध सा जाय। सुबह उठने के बाद पहला काम मंदिर जाने का किया और जैसे ही उस भिखारी को देखा मन प्रसन्न हो गया। सीधे उसके पास पहुँची और पूछा, "बाबा कल कहाँ थे?" मुझे आपके बारे में सब-कुछ जानना है। अंधा मुझसे इस प्यार की भाषा को सुनकर रोने लगा। मैंने उसे सहानुभूति दी तो वह अपने जीवन के पिछले पृष्ठों को परत दर परत खोलने लगा।

मैं बचपन से अंधा नहीं था। खाते-पीते किसान घर का बालक था। गाँव की पाठशाला में पढ़ता और खेतों में जमकर मेहनत करता। बड़े हँसी-खुशी से बचपन के दिन गुजर गए। उसके बाद मेरा विवाह पास के ही गाँव की रमा से हुआ और हमारी गृहस्थी की गाड़ी चल पड़ी। जीवन में बड़े उतार- चढ़ाव देखे लेकिन रमा जैसी पत्नी के कारण अकाल, बाढ़ जैसे सब दिन निकल गए। रमा ने एक साथ चार-चार पुत्रों से मेरी झोली भर दी। बस फिर क्या था उनकों बड़ा करने में हम दोनों ने अपना जीवन झोंक। दिन को दिन और रात

को रात न समझा अथाह परिश्रम किया और चारों बेटों को सफलता के ऊँचें शिखरों पर पहुँचा दिया। सब के सब विदेश चले गए और जो गए तो आज तक नहीं लौटे और ना ही उन्होंने हमारी कोई खबर ली। कुछ समय के पश्चात मोतियाबिंद बढ़ जाने के कारण मुझे अपनी आँखों की रोशनी से हाथ धोना पड़ा। जब तक रमा थी तब तक उसने मुझे किसी तरह की तकलीफ न होने दी। लेकिन हाय रे विधाता! उसे तो कुछ और ही मंजूर था उसने मेरी रमा को मुझसे छीन लिया और मुझे अब इस तरह का जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ा। विदेश में रहने वाले मेरे बेटों को तो यह भी पता नहीं होगा कि उनका बूढ़ा बाप जिंदा भी है या मर गया है मैं तो कहता हूँ कि ईश्वर ऐसी संतान किसी को न दें।